The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-3, Issue-4, January-2025
www.theresearchdialogue.com

"स्वामी विवेकानन्द का नवयुवकों को सन्देश – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"

मृदुला शर्मा
शोधार्थिनी
ग्लोकल विश्वविद्यालय सहारनपुर (उ0 प्र0)

डा0 राजकुमार
शोध पर्यवक्षेक
ग्लोकल विश्वविद्यालय सहारनपुर (उ0 प्र0)

सारांश

स्वामी विवेकानन्द ने युवकों से कहा कि ''तुम्हें हिन्दू होने पर गर्व करना चाहिए । जब मनुष्य अपने–आप से घृणा करने लग जाता है, तब समझना चाहिए कि उस पर अन्तिम चोट बैठी है। जब वह अपने पूर्व पुरुषों को मानने को लज्जित है, तो समझ लो कि उसका विनाश निकट है। मैं यद्यपि हिन्दू जाति में नगण्य व्यक्ति हूँ, तथापि अपनी जाति और अपने पूर्व पुरुषों के गौरव से अपना गौरव अनुभव करता हूँ। अपने को हिन्दू बताते हुए हिन्दू कहकर परिचय देते हुए मुझे एक प्रकार का गौरव–सा होता है। मैं तुम लोगों का एक तुच्छ सेवक होने में अपना गौरव समझता हूँ।''

प्रमुख शब्द – अनुगामी , प्रामाणिक , अनुसरण , पुनर्जीवित

''तुम्हारे अन्दर जो कुछ है, अपनी शक्तियों द्वारा उनका विकास करो, पर कभी दूसरों का अनुसरण करके नहीं। हाँ, दूसरों के पास अगर कुछ अच्छा हो, तो उसे ग्रहण कर लो। औरों के पास से तो हमें कुछ सीखना होगा। औरों से उत्तम बातें सीखकर उन्नत बनो। जो सीखना नहीं चाहता, वह तो पहले ही मर चुका है। नीच व्यक्ति की सेवा करके भी श्रेष्ठ विद्या सीखने का प्रयत्न करो। चाण्डाल द्वारा भी श्रेष्ठ धर्म की शिक्षा गृहण करो। औरों के पास कुछ पाओ सीख लो, उसे अपने साँचे में ढाल लेना होगा। दूसरों की शिक्षा ग्रहण करते समय उसके ऐसे अनुगामी न बनो कि अपनी स्वतन्त्रता गवाँ बैठो।

स्वामीजी युवकों को अमृत सन्देश देते हुए आगे कहते हैं– ''तुम्हें ध्येयवादी युवक होना चाहिए। मनुष्य को, केवल मनुष्यों की आवश्यकता है और सब कुछ हो जायेगा, किन्तु आवश्यकता है–

वीर्यवान तेजस्वी, पूर्ण प्रामाणिक नयवुवकों की। मेरी आशाएँ इस नवोदित पीढ़ी में आधुनिक पीढ़ी में केन्द्रित हैं। उसी में से मेरे कार्यकर्त्ता निर्मित होंगे। तुम सब अपने में यह विश्वास रखो कि प्रत्येक आत्मा में अनन्त शक्ति विद्यमान है। बस तभी तुम सारे भारत को पुनर्जीवित कर सकोगे। फिर तो हम दुनिया के सभी देशों में जायेंगे और हमारे भाव उन अनेक शक्तियों के अंश स्वरूप हो जायेंगे, जिनके द्वारा संसार का प्रत्येक राष्ट्र ऊपर उठ रहा है। वेदों में कहा है– तरुण, बलशाली, स्वस्थ एवं तीव्र मेधा वाले ही ईश्वर के पास पहुँचते हैं। तुम्हारे भविष्य को निश्चित करने का यही समय है। इसलिये मैं कहता हूँ कि अभी इस भरी जवानी में, इस नये जोश के जमाने में ही काम करो। काम करने का यही समय है। इसलिये अपने भाग्य का निर्णय कर लो और काम में लग जाओ, क्योंकि जो फूल बिल्कुल ताजा है, जो हाथों से मसला नहीं गया है और जिसे सूँघा नहीं गया है, वही भगवान के चरणों पर चढ़ाया जाता है, उसे ही भगवान ग्रहण करते हैं।''

''अपने पैरों पर आप खड़े हो जाओ, देर न करो, क्योंकि जीवन क्षण स्थायी है। वकील, बैरिस्टर बनने की अभिलाषा ही जीवन की सर्वोत्तम अभिलाषा नहीं है। इससे ऊँची अभिलाषा रखो और अपनी जाति, देश, राष्ट्र और मानव व समाज के कल्याण के लिए आत्मोत्सर्ग करना सीखो। जीवन की अवधि अल्प है, परमात्मा अजर, अमर, अनन्त है और मृत्यु अनिवार्य है। इसलिए आओ, हम अपने आगे एक महान आदर्श खड़ा करें और उसके लिए अपना जीवन उत्सर्ग कर दें।''

तब ही और केवल तब ही तुम हिन्दू कहलाने के अधिकारी हो। जब इस नाम को सुनते ही तुम्हारी रगों में शक्ति विद्युत तरंग दौड़ जाये। जब इस नाम को धारण करने वाला प्रत्येक व्यक्ति, वह चाहे जिस देश में, वह चाहे तुम्हारी भाषा बोलता है या अन्य कोई । प्रथम मिलन में ही तुम्हारा सगे से सगा तथा प्रिय से प्रिय बन जाये।

किसी व्यक्ति का दुःख दर्द तुम्हारे हृदय को इस प्रकार व्याकुल कर दे, मानो तुम्हारा पुत्र संकट में हो। तभी और केवल तभी हिन्दू कहलाने के अधिकारी हो सकोगे, जब तुम उनके लिए सब कुछ सहने को तत्पर रहोगे। उन महान गुरू गोविन्द सिंह के समान, जिन्होंने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए अपना रक्त बहाया, रणक्षेत्र में अपने लाडले बेटों को बलिदान होते देखा । यदि तुम अपने देश का कल्याण करना चाहते हो, तो तुम में से प्रत्येक को गुरू गोविन्द सिंह बनना होगा। भले ही तुम्हें देशवासियों में सहस्रों दोष दिखायी दें, पर ध्यान रखना कि उनमें हिन्दू रक्त है। यदि वह तुम्हे धक्का देकर बाहर कर दे, तब भी तुम कहीं दूर जाकर उस शक्तिशाली सिंह–

गोविन्द सिंह के समान मृत्यु की गोद में चुपचाप सो जाना। ऐसा ही व्यक्ति हिन्दू कहलाने का वास्तविक अधिकारी है, यही आदर्श सदैव हमारे सामने रहना चाहिए। ''आओ हम अपने समस्त विवादों एवं आपसी कलह को समाप्त कर स्नेह की इस भव्यधारा को सर्वत्र प्रवाहित कर दें।''

स्वामी विवेकानन्द जी ने स्वयं पर विश्वास करने की प्रेरणा दी। आत्मविश्वास रखने पर ही व्यक्ति में कुछ करने की क्षमता विकसित होती है और आत्मविश्वासी युवक ही समस्त बाधाओं को लांघकर ऊपर उठता है। विवेकानन्द जी ने कहा है, ''लोग कहते हैं– इस पर विश्वास करो, उस पर विश्वास करो, मैं कहता हूँ– पहले अपने–आप पर विश्वास करो। अपने पर विश्वास करो। सर्वशक्ति तुम में है... ....कहो, हम सब कुछ कर सकते हैं।''

मेरी परिकल्पना है हमारे शास्त्रों का सत्य देश–देशान्तर में प्रचारित करने की योग्यता नवयुवकों को प्रदान करने वाले विद्यालय भारत में स्थापित हों। मुझे और कुछ नहीं चाहिए, साधक चाहिए, समर्थ, सजीव, हृदय से सच्चे नव युवक मुझे दो शेष सब आप ही प्रस्तुत हो जायेगा। सौ ऐसे युवक हो तो संसार में क्रान्ति हो जाये। आत्मबल सर्वोपरि है, वह सर्वजयी है क्योंकि वह परमात्मा का अंश है; निस्संशय तेजस्वी आत्मा ही सर्वशक्तिमान है ।

स्वामी जी का विश्वास था कि वर्तमान शिक्षा बालकों को सेवा–कार्य के लिए विशेष रूप से प्रोत्साहित करती है। सेवा कार्य के सुअवसर न पाकर उदरस्पूर्ति मात्र हेतु ही हमारे देश के नवयुवक इधर से उधर लक्ष्य विहीन होकर घूमते हैं। इस बेकारी की बीमारी को मुलतः नष्ट करने के लिए उन्होंने प्राविधिक शिक्षा पर विशेष बल दिया है। वे शिक्षा के उस पक्ष में विश्वास करते थे, जिससे नवयुवक स्वावलम्बी बने, रोटियों के लिए दूसरों का मुँह न ताक कर अपने पैरों के बल खड़ा हो सके, अर्थात् ऐसा कुछ रचनात्मक कार्य करने में सक्षम हो, जो उसके जीवन की प्रतिदिन की समस्याओं के निराकरण में सहायता दे। इसलिये स्वामी जी ने नवयुवकों को प्राविधिक शिक्षा के साथ औद्योगिक शिक्षा पर भी बल दिया है।

पाश्चात्य देशों की भौतिक उन्नति से प्रभावित होकर स्वामी जी भारतीय नवयुवकों को धार्मिक शिक्षा के साथ पाश्चात्य विज्ञान की शिक्षा देकर उन्हें आर्थिक रूप से सम्पन्न बनाना चाहते थे। इस सम्बन्ध में उन्होंने कहा– आज हमें आवश्यकता है वेदान्तयुक्त पाश्चात्य विज्ञान की। स्वामी जी पाठ्यक्रम के अन्तर्गत आध्यात्मिक व भौतिक, दोनों प्रकार के विषयों को रखना चाहते थे। आध्यात्मिक, धार्मिक शिक्षा देने के सम्बन्ध में उनकी मान्यता थी– कौरी भौतिक अथवा लौकिक शिक्षा से नवयुवकों में मानवीय मूल्यों का ह्रास होता है। फलतः वह जड़ हो जाता है। दूसरा

कारण यह है कि धर्म शिक्षा का मेरुदण्ड है तथा भारत की प्रमुख शक्ति है। अतः नवयुवकों को उदार बनाने एवं उनमें मानवीय मूल्य विकसित करने हेतु धार्मिक शिक्षा अवश्य दी जानी चाहिए। स्वामी जी को इस बात में अडिग आस्था थी कि भीरू, म्लान और उदासीन व्यक्ति जीवन में कोई कार्य नहीं कर सकते हैं। कार्य वही व्यक्ति कर सकते हैं, जो वीर, निर्भय और कर्मठ हैं। अतः प्रत्येक नवयुवकों के लिए स्वामी जी का सन्देश था– जीवन–संग्राम में वीर बनो। कहो, सबसे कहो कि तुम निर्भय हो। भय का त्याग करो, क्योंकि भय मृत्यु है, भय पाप है, भय अधोलोक है, भय अधार्मिकता है, भय का जीवन में कोई स्थान नहीं है। ''स्वामी जी का कहना था कि नवयुवकों के जीवन में संघर्ष की प्रधानता होनी चाहिए ।

स्वामी विवेकानन्द ने इस बात पर जोर दिया कि वेदान्त का द्वार समस्त प्राणियों के लिए खुला रहे, जाति–पाँति, रंगभेद, आचार–विचार और स्त्री–पुरुष का भेदभाव किसी के लिए बाधक न हो उनका मत था कि वेदान्त हर जगह व्यवहार में लाया जा सकता है– पश्चिम में धार्मिक उदारता लाने के लिए तथा पूर्व में समाज निर्माण के लिए। वे भारतीयों को आत्मविश्वास तथा आत्मनिर्भरता की शिक्षा देना चाहते थे। स्वामी जी यह भी चाहते थे कि प्रत्येक भारतीय नवयुवक अपने मन से हीनता की भावना निकाल दे। उन्हें अपने देश, जाति और भारतीय होने का गर्व होना चाहिए ।

विवेकानन्द ने नवयुवकों को सन्देश देते हुए कहा कि– "सबसे पहले हमारे युवक को स्वस्थ व शक्तिशाली बनना है, धर्म तो बाद की चीज है..... तुम गीता पढ़ने की अपेक्षा फुटबाल खेलने के द्वारा स्वर्ग के अधिक निकट पहुँच सकते हो..... यदि शरीर में स्वस्थ रक्त है तो अपने पैरों पर खड़े हो सकते हो, उपनिषदों व आत्मा की महत्ता को अधिक भलीभांति समझ सकोगे।'' क्योंकि शक्ति ही शिव है और दुर्बलता पाप है। असीम शक्ति ही धर्म है।

हमें कार्य प्रारम्भ करना चाहिए, परन्तु कैसे? एक मन्दिर होना चाहिए.... हम उसे गैर–साम्प्रदायिक मन्दिर बनाएँगे। एक मात्र उपाय हो, जो हमारे सभी धर्म सम्प्रदायों का प्रतीक है....इस मन्दिर के साथ एक संस्था हो, जिसमें ऐसे शिक्षक तैयार किए जाएँ, जो हमारे लोगों में धर्म–प्रचार एवं लौकिक शिक्षा देने हेतु सर्वत्र भ्रमण करते रहें, उन्हें काम करने होंगे.... तब इन्हीं धर्म–प्रचारकों और शिक्षकों के माध्यम से कार्य का विस्तार होगा और क्रमशः अन्य स्थानों पर भी इसी प्रकार के मन्दिर प्रतिष्ठित होंगे, और यह कार्य सम्पूर्ण भारत को व्याप्त कर लेगा। यह मेरी योजना है। यही बड़ी विशाल गलती होगी, पर इसकी इस समय आवश्यकता है। आप पूछेंगे, धन कहाँ है?

धन की आवश्यकता नहीं है। धन तो कुछ नहीं है..... मनुष्य चाहिए। मनुष्य कहाँ हैं? यही तो प्रश्न है।

इसलिए उठ खड़े हो जाओ, जीवन बहुत थोड़ा है। बहुत कार्य करने हैं, न कि एक वकील बनकर तर्क–वितर्क करते हुए दोष निकालना है। अपने वंश के कल्याण के लिए और मानवता की भलाई के लिए इस महान कार्य में स्वयं को लगाने के अतिरिक्त और कोई महान कार्य नहीं है। जीवन में क्या है? इसलिए चलो, एक महान कार्य हाथ में लो और सारा जीवन उसमें लगा दो। ऐसा हमारा संकल्प हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. डॉ. बी.बी. सिंह : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2, 2012, पृष्ठ संख्या–419.
2. डॉ.रामशकल पाण्डेय : उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2, 2015, पृष्ठ संख्या–292, 293.
3. पी. डी. पाठक : शिक्षा, समाज पाठ्यचर्या और शिक्षार्थी, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2, 2015, पृष्ठ संख्या–112.
4. डॉ. रामशकल पाण्डेय : उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2, 2014, पृष्ठ संख्या–299.
5. डॉ. रामशकल पाण्डेय : उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2, 2015, पृष्ठ संख्या–228.
6. डॉ. पी. डी. शर्मा : भारतीय समाज में शिक्षा, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2, 2011, पृष्ठ संख्या–32.
7. डॉ. बी.एल. फड़िया : आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, पृष्ठ–54.
8. स. ही. वात्स्यायन ''अज्ञेय'', रघुवीर सहाय : विवेकानन्द, रोमां रोलां –लोक भारती प्रकाशन पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद, पृष्ठ–93.
9. रामानन्द मिश्र : भारतीय शिक्षा के प्रवर्त्तक, आर. एस.ए. इन्टरनेशनल, आगरा–2, 2014, पृष्ठ – 64.
10. डॉ. मुक्ता सिकरवान : सामाजिक अध्ययन का शिक्षण, आर. एस. ए. इन्टरनेशनल, आगरा–2, 2014, पृष्ठ–168.

11. पी.डी. पाठक : उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा के आधार एवं विकास, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा – 2, 2013, पृष्ठ–120.

12. पूनम मदान एवं विजय गुप्ता और रोमा श्रीवास्तव : शिक्षा के दार्शनिक परिप्रेक्ष्य, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, 2015/16, पृष्ठ–193.

13. डॉ. पी. डी. शर्मा : भारतीय समाज में शिक्षा, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2, 2014, पृष्ठ संख्या–167.

14. अजय मित्तल : स्वामी विवेकानन्द एक परिचय, विश्व संवाद केन्द्र, मेरठ–2014, पृष्ठ–37.

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-3, Issue-4, January -2025
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number Jon.-2025/30
Impact Factor (RPRI-4.73)

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

मृदुला शर्मा और डा0 राजकुमार

for publication of research paper title

"स्वामी विवेकानन्द का नवयुवकों को सन्देश – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and

E-ISSN: 2583-438X, Volume-03, Issue-04, Month January, Year-2025.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY

Google Scholar, ResearchGate, Academia.edu, Semantic Scholar, OPEN ACCESS, Digital Online Identifier-Database System, I2OR, ROAD DIRECTORY OF OPEN ACCESS SCHOLARLY RESOURCES, IIJIF, JOURNAL RATING www.rpri.in Journal Impact Factor, Academic Resource Index ResearchBib